सिंचाई

प्रथम माह में सप्ताह में दो बार तत्पश्चात सप्ताह में एक बार सिंचाई करना आवश्यक होती है। वर्षाकाल में आवश्यकता पडने पर ही सिंचाई की जाए।

निदाई गुडाई

प्रथम निराई रोपण के एक माह बाद तथा दूसरी निराई पुनः एक माह बाद की जानी चाहिये। निराई के साथ ही हाथ से पौधों के आसपास गुडाई की जा सकती है।

संभावित उत्पादन

बगैर सिंचाई के औसतन एक वर्ष में कुल तीन फसलों को मिलाकर प्रति हेक्टेयर 10 टन ताजा पत्तियों का उत्पादन होता है। 10 से 20 किग्रा तेल की प्राप्ति संभावित है। सिंचाई सुविधा उपलब्ध होने पर इससे दुगना उत्पादन संभव है।

कटाई (विदोहन)

विदोहन के पूर्व यह ध्यान रखना चाहिए कि पौध में पूरी तरह से पुष्पन हो गया हो। पौधों को भूमि की सतह से 15 से.मी. ऊपर से काटना चाहिए कटाई के समय अच्छी धूप खिली होनी चाहिए।तुलसी की खेती की वर्तमान में लागत 75 से 85 हजार रू. प्रति हेक्टेयर अनुमानित है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

पादप कार्यिकी विभाग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

तुलसी

(*Ocimum tenuiflorum* Linn.)

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2026

तुलसी

(*Ocimum tenuiflorum* Linn.)

कुल	:	लेमियेसी (Lamiaceae)
हिन्दी नाम	:	तुलसी
अंग्रेजी नाम	:	हॉली बासील (Holy Basil)
आयुर्वेदिक नाम	:	तुलसी
व्यवसायिक नाम	:	तुलसी
उपयोगी भाग	:	जड़, तना, पत्तियाँ एवं तेल

भारत में तुलसी का पौधा धार्मिक और औषधीय महत्व का है, जिसकी महत्ता प्राचीन चिकित्सा पद्धति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति दोनो में है। इसकी लगभग 150 प्रजातियाँ हमारे देश में पायी जाती हैं। इसकी प्रमुख प्रजातियाँ निम्नलिखित हैं।

(1) स्वीट बेसिल या बोलई तुलसी

(2) कर्पूर तुलसी

(3) वन तुलसी या रामा तुलसी

(4) जंगली तुलसी

(5) श्री तुलसी या श्यामा तुलसी

तुलसी शाकीय औषधीय पौधा है। यह झाड़ीनुमा पौधा 1 से 2 फीट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बैंगनी आभा वाली होती है जिनमें हल्के रोयें होते हैं। पत्तियाँ 1 से 2 इंच लम्बी, सुगंधित और अंडाकार होती है। इसमें पुष्पन शीतऋतु में होता हैं। सामान्यतः यह पौधा 2 से 3 वर्षों तक हरा – भरा रहता है।

रासायनिक घटक

तुलसी में अनेक जैव सक्रिय तत्व पाये जाते है जिनमे टैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड सम्मिलित है। इसके अलावा इसमे 0.1 से 0.3 प्रतिशत तेल भी पाया जाता है। इस तेल में यूजीनॉल एवं कार्याकोल पाया जाता है जो कि औषधीय रूप से बहुत ही महत्तवपूर्ण घटक है।

वितरण

यह पौधा उष्ण कटिबंधीय एवं कटिबंधीय दोनों तरह की जलवायु में पाया जाता है।

भूमि एवं जलवायु

इसकी खेती भूमि के लिए बलुई दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त मानी जाती है।

प्रवर्धन

इसका प्रवर्धन बीजो एवं कंटिग्स द्वारा होता है, किन्तु यदि इसकी खेती करनी है तो बीजों द्वारा करना उचित होता है।

पौधशाला

पौधशाला रोपाई के एक माह पूर्व बना लेना चाहिये। क्यारियों की लंबाई आवश्यकतानुसार एवं चौड़ाई 1.5 मी. होनी चाहिए तथा ये जमीन से 10 से.मी. ऊँची हों। एक एकड़ के खेत में 50 ग्राम. बीज की आवश्यकता होती है। कतार से कतार का फासला 10 से.मी.से कम न रखें,ऐसा करने से पौधे स्वस्थ रहते है। तुलसी की फसल लेने के लिये सर्वप्रथम मई माह में खेत की जुताई की जाती है। पौधों को खेत में लगाने से पहले खेत में 600 कि.ग्रा. गोबर खाद मिला देना चाहिये। पौध, पौधशाला में चार सप्ताह की हो जाने के बाद रोपाई के लिये तैयार होती हैं। पौधशाला में पर्याप्त नमी होना चाहिये, ताकि पौध उखाड़ने में आसानी हो और जड़े सुरक्षित रहें। पौधो की जड़ो को साफ पानी से धो लेना चाहिये। रोपाई करते समय ध्यान रहे कि पौधे से पौधे की दूरी 1.2 मी. होना चाहिये। इस प्रकार लगभग 7000 पौधे प्रति हेक्टेयर लगाये जाते है। समय समय पर खरपतवार निकालना चाहिये तथा गुड़ाई भी करना चाहिए। इसकी खेती में समस्त व्यय सहित लगभग 50 हजार से 60 हजार रूपये प्रति हेक्टेयर खर्चा आता है।